प्रथम अध्याय

भीष्म साहनी : जीवन व्यक्तित्व और कृतित्व

प्रथम अध्याय

भीष्म साहनी : "जीवनी व्यक्तित्व और कृतित्व"

1.1 प्रस्तावना

हिन्दी के प्रगतिशील परंपरा के सशक्त लेखक भीष्म साहनी हिन्दी उपन्यास साहित्य में असाधारण महत्त्व रखते हैं। उन्होंने समाज के भीतर चलनेवाले संघर्षों का यथार्थवादी चित्रण किया है। एक उपन्यासकार, कहानीकार, साहित्यकार, और विचारक के रूप में उनका योगदान रहा है। भीष्म साहनी ने अपने साहित्य में सामंतवादी, पूँजीवादी, शोषित वर्ग, शोषक वर्ग की यथार्थ जिंदगी का चित्रांकन किया है। उन्होंने देश में बिखरी हुई साम्प्रदायिक समस्याओं का हृदयस्पर्शी वर्णन किया है। भीष्म साहनी ने अपने साहित्य के द्वारा सामाजिक जीवन के यथार्थ को प्रभावपूर्ण ढंग से व्यक्त किया है। इसके साथ-साय क्रान्ती और मुक्ति की प्रक्रिया का उद्‌घाटन भी किया है। राष्ट्रिय एकता और भावात्मक एकता के लिए भी उन्होंने अपने साहित्य के द्वारा विशेष भूमिका निभायी है। उन्होंने मानवतावादी विचारधारा को प्रधानता दी है। समाज में व्याप्त बुराइयों, धर्माभिमान, द्वेष आदि की ओर संकेत किया है। उनके समुचे साहित्य में मानवता के भाईचारों के और सद्‌भावना के दर्शन होते है। भीष्म साहनी ने जीवन की वैचारिक ऊँचाइयों को प्रभावात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। उनका सारा साहित्य सामाजिक जीवन का दर्पण बनकर सामने आता है। उन्होंने जो भोगा, जो महसूस किया, जो अनुभव किया उसको ही अपने साहित्य के माध्यम से समाज के सामने रखा।

उनके साहित्य में भिन्न भिन्न प्रकार की समस्याओं का यथार्थ चित्रण मिलता है।

फूलता रहा, उनकी तीन बहने थी, जिनका देहान्त हो गया था। उनके दो भाई थे, माँ ने ही उन्हें बहुत कुछ सिखाया था। राम-लक्ष्मण की तरह रहने का आदर्श उनके सामने रखा था। भीष्म साहनी घर में सबसे छोटे होने के कारण सभी लोग उन पर हुक्म चलाते थे। अपनी माँ की कुछ बाते उन्हें याद रही हैं। बचपन में माँ के अच्छे संस्कार भीष्म साहनी पर अंकित हुए। उन्होंने माताजी की आज्ञाओं का पालन करने में कोई कसर नही छोडी थी। माँ और पिताजी के संस्कारों के तले धीरे-धीरे भीष्म साहनी का बचपन का पौधा अंकुरित, पल्लवित और पुष्पित होने लगा।

1.2.1 भीष्म साहनी के भाई

भीष्म साहनी के बडे भाईसाहब का नाम था "बलराज साहनी" वे अपने भाई के कदमों पे कदम रखकर नही चले, बस पीछे-पीछे चलते थे। बलराज साहनी दिखने में बड़े अच्छे थे, पढ़ने में उनका दिल लगता था, अभिनय में उनकी विशेष दिलचस्पी रही। उनका जीवन संघर्ष की कहानी कहलाता है, वे एक मंजे हुए कलाकार, अभिनेता थे। अपना जीवन बनाये रखने के लिए अपना व्यक्तित्व अलग बनाने के लिए काफ़ी संघर्ष करना पडा। भीष्म साहनी अपने बड़े भाईसाहब का बड़ा आदर करते थे। बलराज भाई जिंदगी की हर चीज में हर बात में दिलचस्पी लेते थे। खेलकूद में भी वे रूची लेते थे, सिनेमा और नाटक में भी वे विशेष दिलचस्पी लेते थे। उनका मित्र परिवार बहुत बडा था, बलराज साहनी एक बड़े ही शरीफ, इमानदार इन्सान कहलाते थे।

1.2.2 भीष्म साहनी का परिवार

व्यक्ति का परिवार व्यक्ति के जीवन को प्रभावित और प्रेरित करता है, उस व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास मे परिवार के संस्कारों का बड़ा योगदान रहता है। भीष्म साहनी के परिवार की हालत कुछ खास किस्म की नही थी, वे आशावादी थे, और पुरूषार्थ प्रेमी आर्यसमाजी थे। भीष्म साहनी के परिवार में सदाचार को विशेष महत्त्व था। उनका जीवन सीधा-सादा था।

1.2.3. **भीष्म साहनी का जन्म :-**

हिन्दी के चर्चित उपन्यासकार भीष्म साहनी का जन्म 8 अगस्त 1915 में रावलपिंडी में हुआ। उनके पिता का नाम था 'हरबंशलाल' और माता का नाम 'लक्ष्मीदेवी' हिन्दी फिल्म जगत के मशहूर और मारूफ अभिनेता बलराज साहनी इनके बड़े भाई थे। घर के अच्छे संस्कारों के परिवेश में भीष्म साहनी का जीवन विकसीत हुआ है।

1.2.4. **भीष्म साहनी का बचपन :-**

भीष्म साहनी का बचपन कुछ अलग किस्म का रहा, स्वयं उन्होनें अपने बचपन बचपन के बारे में लिखा है - "बचपन का माहौल अंधेरी गुफा जैसा लगता है, मैं अक्सर बीमार रहता था, और उस खेल-कूद से वंचित था। जो बचपन का अधिकार है। खाटपर पड़ा सरकती धूप को देखता रहता गली में गुजरते फकिरों भीक-मांगो खोमचेवालों की आवाजें सुनता रहता।"[1] वे शायद तनहायी के कारण लेखक बने हुएँ नजर आते हैं।

1.2.5. **भीष्म साहनी के मां-बाप :-**

भीष्म साहनी के पिताजी 'हरवंशलाल' आर्य समाजी थे। पिताजी कि घरेलू हालत ठीक नही थी। कंगाली में बेहाली में उनकी जिंदगी गुजर रही थी। उनका इश्वर में विश्वास था। सीधी-सादी जिंदगी के वे कायल थे। भीष्म साहनी अपने पिताजी के अब्जाओ को मानते थे। उनका पालन करते थे। उनके पिताजी आर्य समाज के मशहूर कार्यकर्ता थे। वे अपना सारा पत्र-व्यवहार उर्दू भाषा में करना पसंद करते थे। भीष्म साहनी के पिताजी का अपना एक छोटासा कारोबार था। वे कपड़े का व्यापार करते थे। भीष्म साहनी को पिताजी कि कुछ बाते याद आती है वे कहते थे - "मुठ्ठी भर मिट्टी भी उठानी है तो बडे ढेर में से उठाना।"[2] इसतरह बचपन की यादे उनके पास थी। पिताजी आर्य समाजी थे, इसलिए आर्य समाज की विचारधारा का भीष्म साहनी पर गहरा असर रहा हैं।

भीष्म साहनी की मां

भीष्म साहनी की मां का नाम था लक्ष्मी। जैसा उनका नाम था, वैसा ही गुण भी था। लक्ष्मी देवी बड़ी धार्मिक थी। धर्म सेवा और त्याग की भावना उस में भरी थी। ऐसी ममतामयी मां की गोंद में भीष्म साहनी का बचपन फलता-

"सादापन जीवन, सजावट मृत्यू है
सदाचार जीवन दूराचार मृत्यू है।"[3]

भीष्म साहनी का परिवार एक आदर्श परिवार कहलाता था और ऐसे आदर्श परिवार में पलकर उनके व्यक्तित्व का विकास हुआ है।

1.2.6. **भीष्म साहनी की शिक्षा**

भीष्म साहनी की प्राथमिक शिक्षा "गुरूकुल पोठोहार" में संपन्न हुई, फिर उन्होंने दो वर्षों के बाद स्थानिय डी·ए·वी·स्कूल में दाखिला ले लिया। उन्होंने 1931 में मॅट्रिक्युलेशन की परीक्षा पास की। 1933 में भीष्म साहनी इन्टरमेडियेट की परीक्षा उत्तीर्ण हुए। 1933 में भीष्म साहनी लाहोर चले आये, यहाँ पर एक गव्हर्मेन्ट कॉलेज से अंग्रेजी में एम·ए· पास किया। उसके बाद 1931 में एम·ए· पास करने के बाद उन्होंने अपने पिताजी के साथ व्यापार करना शुरू किया। भीष्म साहनी जब विद्यार्थी थे तब सारे देश में आज़ादी की माँग बढ़ती जा रही थी। लोग जुलूस निकाल रहे थे, नारे लगा रहे थे, गांधीजी का आज़ादी का आंदोलन जारी था। देश के करोडों लोग अपना घर-बार छोड़कर गांधीजी द्वारा चलाये गये आज़ादी के आंदोलन में सक्रिय सहयोग दे रहे थे।

उन्होंने कहा है - "मैं स्कूल में था तब भगतसिंह और उसके साथी फाँसी झूल गये थे। उसी समय की कुछ कविताएँ लोकप्रिय थी उनमें किसी न किसी रूप में भावनाएँ व्यक्त होती थी। देश-प्रेम पर लिखे गीत बड़ेही भावप्रधान होते थे।"

एक फूल बनमाली से कहता है -

"मुझे तोड़ लेना बनमाली
उस पथ पर तुम देना फेक
मातृभूमी पर चढ़ाने शीश (शिश)
जिस पथ पर जावे वीर अनेक"[4]

इस तरह भीष्म साहनी ने राष्ट्रीय उथल-पुथल के वातावरण में अपनी शिक्षा पूरी कर दी। उन दिनों कॉलेजों में चारो ओर अंग्रेजों का ही बोल-बाला था। भीष्म साहनी सरकारी अफ़सर बनने के सपनेमें डूबे थे। भीष्म साहनी पर उनके एक अंग्रेजी अध्यापक "जसवंत रॉय" का बड़ा भारी प्रभाव रहा। वे एक प्रतिभा संपन्न अध्यापक थे, शायद यही कारण है कि भीष्म साहनी ने अंग्रेजी विषय चुन लिया। अंग्रेजी में एम्·ए·कर लिया। लेकिन उनके लेखन की भाषा हिन्दी रही। आगे चलकर उन्होंने पीएच्·डी·की उपाधि भी प्राप्त कर ली।

भीष्म साहनी की नौकरियाँ तथा व्यवसाय

भीष्म साहनी ने एम्·ए· करने के उपरान्त अपने पिताजी के साथ व्यापार करना शुरू किया। यही कारण है कि उनकी शिक्षा में रूकावट आ गयी। वे सरकारी अफ़सर बनना चाहते थे, लेकिन उनका यह सपना पूरा नही हो पाया। जब वे गांधीजी के विचारों से प्रभावित हुए तब उन्हें ऐसा लगा की एजेन्सी का काम बड़ा मुश्किल का काम है। व्यवसाय में मुनाफ़ा कमाना यह बात उन्हें पसन्द नहीं थी। भीष्म साहनी व्यापार के क्षेत्र में विशेष कामयाब नहीं हुए। यह वही समय है, जब वे आगे चलकर स्थानीय डी·ए·वी कॉलेज में पढ़ाने लगे थे। नाटक में अभिनय करना उन्हें अच्छा लगता था, इसी के साथ-साथ कॉंग्रेस का काम करने में भी उनकी रूचि थी। फिर वे 13 अगस्त 1947 दिल्ली चले आये बम्बई में अपने बड़े भाई बलराज साहनी के साथ कुछ दिनों तक रहे। आगे चलकर अंबाला के एक कॉलेज में उन्होंने नौकरी भी स्वीकार कर ली फिर वे 1949-50 में दिल्ली चले आये। दिल्ली में ही भीष्म साहनी अपनी युवा रचनाकारों के एक गोष्ठी में नियमित रूप से हिस्सा लेते थे। इन्ही दिनों वे दिल्ली कॉलेज में काम करने लगे, भारत सरकार की ओर से 1957 में भीष्म साहनी का चयन एक अनुवादक के रूप में सोवियत संघ में हुआ। यहाँ भीष्म साहनी ने सात बरसों तक काम किया। वहाँ से लौटने के बाद भीष्म साहनी ने फिर एक बार दिल्ली कॉलेज में पढ़ना शुरू किया। उन्होंने 1965-67 तक नयी कहानियों के संपादन का काम किया। फिर 1980 में अध्यापन से अवकाश प्राप्त कर स्वतंत्र रूप से लेखन कार्य में जूट गये।

भीष्म साहनी का मित्र परिवार

भीष्म साहनी के कई मित्र ऐसे थे जो बड़े ही गरीब थे। उनमें भीष्म साहनी अपने आप को बेहत्तर समझते थे, उन्होंने कुछ मुस्लिम लड़कों के साथ भी दोस्ती का रिश्ता निभाया। भीष्म साहनी ने अपने भाई के दोस्तों और अध्यापकों के साथ भी दोस्ती निभायी। भीष्म साहनी के मित्रों का उनके घर में बड़ा आदर किया जाता था। उनके बचपन के कुछ दोस्तों के नाम हैं - बरकतराय, हरबन्सलाल, रोशनलाल। भीष्म साहनी के दोस्त आज हमारे बीच नहीं है। जब भी कॉलेज में पढ़ते थे तब उनकी किसी से दोस्ती नहीं थी। कॉलेज जमाने में उन्होंने एक कहानी लिखी थी, जिस में एक प्रेमी था और एक प्रेमिका थी। इस कहानी का शीर्षक था "नीली आँखे" इस कहानी से परिश्रमिक के रूप में उन्हें आठ रूपएँ मिले थे। अपने बड़े भाई बलराज साहनी के जो दोस्त थे, आगे चलकर वे ही उनके दोस्त बने। इन दोस्तों से भीष्म साहनी को बहुत कुछ सीखने मिला। इन दोस्तों के कारण भीष्म साहनी की जानकारी काफी मात्रा में बढ़ गयी और धीरे-धीरे भीष्म साहनी के व्यक्तित्व का विकास होने लगा। उनके व्यक्तित्व में निखार आने लगा। भीष्म साहनी का मानना है कि वे जिनसे मिलते हैं, उन्हें अपने से बड़ा समझते हैं, उन में यह प्रवृत्ति आज भी पायी जाती है। एक बार वे अपने किसी मित्र के साथ मास्को के लिए रवाना हुए फिर उन्होंने एक अनुवादक के रूप में बीस रूसी किताबों का हिन्दी में अनुवाद किया। उनके कुछ खास मित्रों के नाम हैं - निरमल, रामकुमार, नरेशकुमार, योगेशकुमार, अन्सारी, आनंद स्वरूप, हंसराज, रहबर, कल्प बलदेव आदि ये सारे मित्र जब साथ मिलते थे मैहफिल सजती थी, चर्चाएँ होती थी। नयी-नयी किताबों पर चर्चा हुआ करती थी। अपने मित्रों के साथ रहकर भीष्म साहनी बड़ेही प्रसन्न नजर आते थे।

मोहन, राकेश, राजेंन्द्र यादव और सुदर्शन उनके प्रिय लेखक थे। ये ऐसे लेखक थे जिनकी उस जमाने में बड़ी धुम धाम थी। प्रेमचंदजी के साहित्य का भीष्म साहनी पर बड़ा गहरा प्रभाव रहा।

1.2.5 आदतें

भीष्म साहनी की अपनी आदते रहीं हैं। खान-पान के बारे में उनका कोई विशेष आग्रह नहीं है। उन्हें डिबेटिक में बड़ी रूचि रही है, स्टेज ॲक्टिंग में भी उनकी विशेष रूचि रही है। खेलों में भी उनकी रूचि थी। हॉकी खेलना, लम्बी सैर के लिए निकलना, तैयराकी, घुमक्कडी, उनके प्रिय खेल रहे। घूमने मे भी उन्हें बड़ा मजला आता था। इसके सिवा उन्हें साहित्य, इतिहास और समाजशास्त्र आदि विषयों की पढ़ाई में विशेष दिलचस्पी रही है। भीष्म साहनी चाहते थे कि वे पेहलवान बने लेकिन पढ़ने का शौक कमाल का था। वे जब अध्ययन करते थे तो पूरे मन से चित्रों की और कलाओं की प्रदर्शनियाँ देखने में उन्हें बड़ा मजा आता था, यात्रा करना उन्हें बहुत अच्छा लगता था।

इन आदतों के कारण भीष्म साहनी का व्यक्तित्व विशेष प्रकार का बना है।

1.3. भीष्म साहनी का व्यक्तित्व

भीष्म साहनी के व्यक्तित्व के कई आयाम हमारे सामने आते हैं। उनके व्यक्तित्व की पहली विशेषतः है - "सादगी" स्वभाव से बड़े ही शांत और चिंतनप्रिय तथा एकांतप्रिय ही उनका स्वभाव एक अच्छे इन्सान की तरह आदर्श स्वभाव रहा है। वे जब कहते हैं तो बिना किसी पर्दे के बात करते हैं। वे एक सीधे-सादे इन्सान हैं।

1.3.1 विनम्रता

भीष्म साहनी के व्यक्तित्व का दूसरा पहलू विनम्रता। वे स्वभाव से बड़े ही नम्र साहित्यकार ही उनके रहन-सहन विनम्रता है, और उनके व्यवहार में भी वे एक सलीकेदार आदमी ही विनम्रता उनकी स्वभाव में भरी पड़ी है। उनकी पत्नी ने कहा है - "भीष्मजी की एक बात है जो अब तक मुझे अच्छी नहीं लगती, उनकी अत्यधिक विनम्रता। विनम्र होना अच्छी बात है, परंतु अति विनम्र होना

तो अच्छा नहीं लोग नाज़ायज फायदा उठाते हैं।"[5] संक्षेप में उनकी विनम्रता उनके व्यक्तित्व का खास पहलू रहा है।

1.3.2 **समाजसेवा**

भीष्म साहनी के व्यक्तित्व की एक और विशेषता है समाजसेवा। वे जब विद्यार्थी थे तब से उन्होंने समाजसेवा का काम शुरू किया था। समाज के लिए ही वे काम करना पसन्द करते थे। देश प्रेम और राष्ट्रभक्ति उनके व्यक्तित्व के अन्य पहलू हैं। आगे चलकर उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में भी हिस्सा ले लिया, जो गरीब है, जो पीड़ित हैं, उनके प्रति भीष्म साहनी के मन में हमदर्दी है।

1.3.3 **सहनशीलता**

भीष्म साहनी के व्यक्तित्व का एक और आयाम है सहनशीलता का, उनमें सहनशीलता भरी हुई है। वे स्वभाव से सहनशील ही रहे हैं, वे बड़े शांत स्वभाव के और उदारता का उनका व्यक्तित्व बहुत कोमल है, शालीन है। उनके चेहरे पर इसी सादगी के दर्शन होते हैं। उनकी आँखों में करूणा है, और यही करूणा उनके व्यक्तित्व के निरालेपण को साबित करती है। भीष्म साहनी ने अपने देश में व्याप्त अंधश्रद्धाओं का जात-पात का रूढ़ियों का कड़ा विरोध किया है। अस्पृश्यता, ऊँच-नीच आदि का भी उन्होंने डटकर विरोध किया है।

इस तरह से भीष्म साहनी का व्यक्तित्व कई विशेषताओं से भरा हुआ नज़र आता है। जहाँ उन में सादगी है, वहाँ विनम्रता भी। जहाँ उन में सलिका है, वहाँ समाजसेवा में भी उन्हें रूचि रही। देश प्रेम और राष्ट्रप्रेम या राष्ट्रप्रेम के कारण उनका व्यक्तित्व सशक्त बन पड़ा है। गरीबों के बारे में उनके मन में अट्ट श्रद्धा है। अपने शांत, विनयशील स्वभाव के कारण वे बड़े ही प्रिय बने हुए नज़र आते हैं। करूणा के कारण उनके व्यक्तित्व में निखार आ गया है।

इस प्रकार भीष्म साहनी का सार व्यक्तित्व बड़ा ही सशक्त रहा है। जैसा व्यक्तित्व है, वैसाही उनका साहित्य उनके व्यक्तित्व का प्रभाव उनके साहित्य पर देखा जा सकता है।

1.2.4 भीष्म साहनी के नज़र में प्रेमचंद

प्रेमचंदजी का साहित्य पढ़ने से यह बात हमारे सामने आती है कि प्रेमचंद हमारे बहुज नज़दीक हैं। बहुत से लोग आज भी हमारे बीच मौजूद हैं। बड़े विद्वान गण्यमान्य लेखक और पक्षकारों के साथ उनका नज़दीक का संबंध था। उनके किस्से से उनके बहुत से पहलू हमारे सामने आये हैं।

प्रेमचंदजी ने जो भी साहित्य लिखा है, उनके साहित्य का मानव पीड़ित और दुःखी था। जब भी हम प्रेमचंदजी का उपन्यास पढ़ते हैं, हमारे सामने हमारे साथ जो हो रहा है, वही चित्र सामने झलकता है।

प्रेमचंदजी की साहित्य में मानव प्रेम इस तरह का है कि उनके मन में उसके प्रति शुद्ध मानव प्रेम ही है। वह पात्र जमींदार आये या गरीब किसान आये, या जालिम सभी को एक ही तरीके से निखारते रहना चाहते हैं।

प्रेमचंदजी का मानव प्रेम उत्पीड़न दर्द, अन्याय के विरूद्ध अपना आवाज उठाता है।

जो भी साहित्य लिखा है, जोश से लिखा है। उन गरीब किसानो के के दर्द में वह खुद उतरकर उनके धड़कनों के साथ अपने धड़कते दिल को इस तरह हमारे सामने रखा है, पढ़ने वाले पाठक भी कभी भूल जाते हैं कि, यह हम उपन्यास या कहानियाँ पढ़ रहे है। उन्होंने उन किसानों की उत्पीड़न गरीबी को भरे हुए दिल से लिखा है। उस वक्त के किसान का दर्द सच्चाई प्रामाणिकता से हमारे सामने रखा है। वही दर्द आज भी हमारे समाज में किसान के साथ हो रहा है। वही सब विषमताओं से लड़कर आज भी हमारा किसान प्रेमचंद के काल के किसान की तरह जूझकर जी रहा है।

प्रेमचंद्रजी की कफन कहानी भीष्म साहनी को अच्छी नही लगी। उनके नज़र में इस कहानी में नग्न यथार्थ ही मिलता है। इस कहानी में बुधियाँ मरने के बाद उनके बेटा और उसके पिता को कफ़न के लिए समाज के लोगों से जो पैसे मिलते इस मे भरपेट खाना खाते हैं। उनकी भूल नहीं समाज

की विसंगति विडंबनाओं को उन्होंने उभरकर रखा है। यह कहानी दो पात्रों से शुरू हुई थी और समाज परिप्रेक्ष्य को उघडकर समाप्त होती है। अंत में दोनो बाप-बेटे ही खड़े है।

प्रेमचंदजी ने लेखनी उठायी उस दिन से लेकर उनके अंतिम समय तक अपने देश की आज़ादी के बारे तड़पते थे, लिखते थे। स्वतंत्रता प्राप्ति उनका देह था। भारत में गांधीजी के आने के बाद गांधीजी के विचारों, व्यक्तित्व की ओर प्रभावित हुए थे। गांधीजी को उन्होंने अपनी लेखनी में युगपुरूष के रूप में और सांस्कृतिक मूल्यों के प्रतीक के रूप में पेश किया है।

"प्रेमचंदजी ने आर्थिक शोषण का चित्रण किया है। आर्थिक, सामाजिक पद्धति को बेनकाब किया है।" उन्होंने अपने "गोदान" इस उपन्यास में भारत किसान का शोषण सच्चाई सामने रखी है। प्रेमचंदजी ने खुद अपने आँखों से देखकर और कुछ ही कल्पनीकता है नही तो उनके उपन्यास में ज़्यादा से ज़्यादा वास्तविकता ही मिलती है। उन्होने ग्रामीण जीवन की असलियत को इस उपन्यास में हमारे सामने रखी है। उन्होंने ग्रामीण जीवन की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिस्थिति और पूँजीवादी सामंतवाद का विरोध उनके शोषण के कारण इन ग्रामीनों की यह स्थिति हुई है, यह उन्होंने साहित्य में लिखकर लोगों तक पहुँचाने का बड़ा काम किया। इसके सिवा आज़ादी का कोई महत्त्व भी नहीं होगा।

प्रेमचंद के साहित्य में सामाजिक चेतना

प्रेमचंदजी का साहित्य काल आदर्श आन्दोलन काल था। इनका लेखन समय-समय पर इनसे जुड़ा है। आर्य समाज और नव जागरण काल से भी इनका साहित्य जुड़ा हुआ है। प्रेमचंदजी गांधीजी के विचारधारा से प्रभावित हुए हैं। इस क्रांति समाजवादी सिद्धान्तों का उन पर असर हुआ था। उनमें एक खुलापन था। गांधीजी के व्यक्तित्व से प्रभावित उनकी एक कहानी उसका नाम है "आहुती"। इसमें उन्होंने दो युवकों की तुलना की है - एक गरीब है, दूसरा अमीर और एक युवती इनमें से गरीब को चुनती है। गरीब युवक राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग

लेता है। अमीर उस लड़की की खिल्ली उड़ाता है। तब उस लड़की के सामने गांधी की छवि दिखाई देती है। "दुबला पतला कृशकाय, अधनंगा इन्सान घुटनों तक चढ़ी हुई धोती, पिचका चेहरा, परंतु तपस्या, त्याग और निस्वार्थ सेवा की प्रतिमूर्ति और लड़की को अपने निर्णय पर गर्व का भास होता है।" [6]

प्रेमचंदजी की सामाजिक चेतना को देखकर विकास का ही भास होता है। उनके रचना काल के वक्त आन्दोलन का ही काल था। उनके रचनाओं में कही बार गांधीजी का उल्लेख भी है। वह अपनी कहानी और उपन्यासों में अपने देश की राजनीतिक , सामाजिक समस्याओं का उल्लेख भी करते थे।उनके साहित्यमें भारतीय सांस्कृतिक परंपरा की श्रेष्ठता पर भी बल दिया था। उन्होंने भारत की अस्मिता को ऊँचा उठाकर रखा था।

प्रेमचंदजी ने विलास और त्याग वृत्ति को लेकर बहुत लिखा है। वह अपने रचनाओं के बारे में कहते हैं - "जितनी कम किसी मनुष्य में विलासवृत्ति पायी जायेगी, उतना ही अधिक उस मनुष्य का जीवन सार्थक और सुखी होगा और दूसरों के लिए उपयोगी होगी।"[7] इस तरह के उनके अनेक उपन्यास हैं उनमें से "कर्मभूमि", "रूकावट", "कायाकल्प" इस तरह उपन्यास हैं। "रंगभूमि", "सेवासदन", "गबन" इन उपन्यासों में नायिकाओं की जीति-जागती प्रतिमाएँ उतरते हैं।

प्रेमचंदजी ने स्त्रियों के बारे में भी बहुत लिखा है। उनका पहला भी लेख स्त्री पर ही आधारित था। उन्होंने भारतीय स्त्री की हीनस्थिति को लेकर बहुत कुछ लिखा है। खुद एक पुरूष होते हुए भी उन्होंने पुरूष के तुलना में नारी को अधिक श्रष्ठ माना है। वह कहते हैं कि, "नारी त्याग की मूर्ति है, निस्वार्थ प्रेम है। उसकी सेवा भी निस्वार्थी सेवा है।"[8]उनकी रचनाओं में ज्यादातर अन्याय और उत्पीड़न के विरूद्ध आवाज उठाने वाली भी स्त्रियाँ ही हैं। उनकी रचनाओं में स्त्रियाँ निस्वार्थ प्रेमी हैं, लेकिन दासियाँ नहीं हैं। न ही विलास की वस्तु हैं।

प्रेमचंदजी के कथानक में यथार्थता ही हैं । उन्होंने अपने साहित्य

में सामाजिक कुरीतियों, तथा कुप्रथाओं को हमारे सामने रखा है। दहेज, बालविवाह, विधवा की दारूण स्थिति हो, वेश्यावृत्ति उन्होंने इन अमानुषिक प्रथाओं का कड़ा विरोध किया है। जात-पात को भी वे बुरा मानते थे और साम्प्रदायिकता से तो उन्हें नफ़रत ही थी। उन्होंने इन दंगों के वक्त एक लेख लिखा था "जमाना" इसमें कहा है - "वे हिन्दु आज कहाँ हैं जो तन-मन से हिन्दु-मुस्लिम एकता के लिए काम कर रहे हो, जो इसे हिन्दुस्तान का सबसे अहम मसला मानते हो और जो जानते हैं कि स्वतंत्रता की मूल शर्त यही एकता है।"9

प्रेमचंदजी ने सभी कुप्रथाओं की पद्धतियों के विरूद्ध अपनी रचनाओं में आवाज़ उठायी है। भारतीय किसान का शोषण "गोदान" उपन्यास बिल्कुल यथार्थता ही हमारे सामने रखी है। उनकी रचनाएँ कहानियाँ इस तरह की हैं, उनकी जिन्दगी कहानियों में से खुद बोलने लगती हैं।

"प्रेमचंदजी ने कहा है मुझे खोजना है तो रचना में नहीं खोजना तुम उस चित्रशाला में खोजना, जहाँ घीसू और माधव, जोखू और दुःखी चमार, सूरदास और होरी खड़े हैं। मेरे साथीयों को देखकर तुम मुझे समझ पाओगे।"10

प्रेमचंदजी ग्रामीण जीवन की असलियत को समझ चुके थे। उन्होंने पहली बार कथा-मूल्य में देखकर साहित्य में प्रकाशित किया था। उन्होंने ग्रामीण जीवन की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, परिस्थिति सामंतवाद और पूँजीवाद का विरोध उनके शोषण के कारण इन ग्रामीनों की यह स्थिति हुई है, यह उन्होंने साहित्य में लिखकर लोगों तक पहुँचाने का बड़ा काम किया। इसके सिवा आज़ादी का कोई महत्त्व भी नहीं होगा।

भीष्म साहनी पर इस तरह के लेखकों की छाप है। उनमें यशपाल भी हैं। लेकिन उन्होंने लिखा है उनमें ग्रामिणता को नहीं पकड़ा है। थोड़ासा ही मिलता-जुलता साहित्य है। यशपाल के साहित्य में भारतीय जनता के आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को विश्व साम्राज्यवाद और देशीय पूंजीवाद ने किस प्रकार से भ्रष्ट किया है।" समस्याओं की अभिव्यक्ति यशपाल के साहित्य में ही होती है। घटनाओं के

दृष्टि से यशपाल के निकट दिखाई देते हैं।

भीष्म साहनी के साहित्य में आधुनिक भारत में रहनेवाले मध्यमवर्ग की कथा उनके साहित्य में केन्द्र में आती है। उन पर पूँजीवादी व्यवस्था का औद्योगिक दबावों का जनता के जीवन पर प्रभाव कैसे पड़ा है। उनके साथ संघर्ष कर श्रम करते हुए जिनेवाली भारतीय जनता यही भीष्म साहनी के रचनाओं में मूल केन्द्र है।

1.3.5 अपनी पत्नी के नज़र में भीष्म साहनी

भीष्म साहनी की पत्नी ने उनके बारे मे लिखा है, "मैं रावलपिण्डी में डी.ए.बी.कॉलेज में बी.ए. की छात्रा थी, वही अंग्रेजी पढ़ाते हुए उनके पहली मुलाकात हुई। मैं कॉलेज साइकिल से जाती थी और भीष्मजी बहुत सीधे-सादे चुप और गंभीर रहनेवाले प्राध्यापक थे जब कि मैं काफि चंचल थी।"[11]

भीष्म साहनी की पत्नी का नाम था, शीला साहनी उनकी पत्नी भी नौकरी करती थी। अपनी पत्नी के नज़र में भीष्म साहनी एक बहुत अच्छे पति थे। उन्होंने कभी अपनी पत्नी पर हुक्म नही चलाया। वे अपनी पत्नी के कामों मे हाथ बँटाते थे, काम करते हुए भीष्म साहनी थकते नहीं थे। उनकी पत्नी भी स्वभाव से बड़ी शांत रही है। अपने पति कि विनम्रता से परेशान रहती थी, क्योंकि वह जानती थी कि उनकी विनम्रता का लाभ दूसरे लोग उठा रहे हैं। अपने पति शीला साहनी ने कभी शिकायत नहीं की उनका मानना था, भीष्म साहनी बहुत अच्छे पति हैं, बहुत ही सहनशील हैं, उन्हें गुस्सा कभी नहीं आता, वे कभी किसी से डरे नहीं, उनमें सहनशीलता बहुत ज्यादा रही। उनके Sence of humar बहुत ही बढ़िया थी। पत्नी के नज़र में पति को काम करने कि शक्ति अधिक थी - "वे घंटों काम करते रहते हैं।"

अपनी पहली मुलाकात के बारे में शीला साहनी लिखती हैं - "रावलपिण्डी में मेरे पिताजी पुलिस में थे "भूतगाडी" नामक भीष्मजी का नाटक देखने के लिए पिताजी मुझे ले गये, यह नाटक मुझे काफ़ि अच्छा लगा, इसमें उन्होंने अभिनय भी अच्छा किया था।"[12]

इस प्रकार अपने पत्नी के नज़र मे भीष्म साहनी एक अच्छे पति के रूप में पहचाने जाते हैं। भीष्म साहनी के नज़र में उनकी पत्नी एक अच्छी पत्नी के रूप में रही है।

1.3.6. भीष्म साहनी के पुत्र-पुत्रियाँ

भीष्म साहनी के परिवार में उनके दो बच्चे हैं। एक बेटा जिसका नाम है वरूण ओर बेटी है कल्पना। अपने बच्चों से बेहद प्यार करते हैं, बच्चों को भी अपने पापा बहुत पसन्द हैं। वे उनके साथ घंटो बाते करते हैं, उन्हें समझाते भी हैं। उनके सामने कोई परेशानी हो तब वे उनकी परेशानी को दूर करते हैं। बच्चे अपने पापा के साथ चर्चा करते हैं, दोनों अपनी-अपनी पढ़ाई में मग्न रहते हैं।

1.4 भीष्म साहनी का कृतित्व

भीष्म साहनी के व्यक्तित्व की तरह उनका कृतित्व उल्लेखनीय है। उनके समूचे साहित्य में समयगत सच्चाइयों का चित्रांकन देखने मिलता है। उनके साहित्य का केन्द्रबिंदू है, भारत के नगरो और महानगरों में रहनेवाले मध्यम वर्ग के लोग। इनके सुख दुःखों का आशा-निराशाओं का बड़ाही यथार्थ वर्णन भीष्म साहनी ने अपने साहित्य में किया है। उन्होंने सामाजिक जीवन के यथार्थ को प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है। उनके व्यक्तित्व की तरह उनकी रचनाएँ भी सशक्त बन पड़ी है। उन्होंने अपने रचनाओं के बारे में लिखा है -, "साहित्य के क्षेत्र में मेरे अनुभव वैसे ही सपाट और सीधे-साधे ही रहे जैसे जीवन, मैं समझता हूँ, अपने से अलग साहित्य नाम की कोई चीज नहीं होती जैसे मै हूँ, वैसी ही मेरी रचनाएँ, मेरे संस्कार, मेरे अनुभव, मेरा व्यक्तित्व, मेरी दृष्टि, सभी मिलकर रचना की सृष्टि करते हैं। इनमें से एक भी झूठी हो तो सारी रचना झूठी पड़ जाती है। प्रत्येक रचना मेरे समझ में एक इकाई होती है, संश्लिष्ट और अटूट जिसमें कुछ भी अलग नहीं किया जा सकता न विचार, न शिल्प, न शब्द, सभी के सांमजस्य से उसका अस्तित्व बनता है।" [13]

भीष्म साहनी के प्रत्येक रचना की अपनी विशेषत है, उनकी प्रत्येक रचना राजनीतिक और समाज की वैचारिक भूमिका लेकर राजनीति उपस्थित होती है।

भीष्म साहनी ने अपनी रचनाओं में पूँजीवादी व्यवस्था से उत्पन्न विकृतियों और विसंगतियों को आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। जीवन की यथार्थता को भीष्म साहनी ने पाठकों के सामने रखने का सफल प्रयास किया है। उन्होंने उपन्यास और कहानियाँ भी लिखी हैं। उनकी रचनाओं की सूची इस प्रकार दे सकते हैं-

1.4.2. **उपन्यास**

1. झरोखे ⟨1967⟩
2. कड़ियाँ ⟨1970⟩
3. तमस ⟨1973⟩
4. मयादास मी माड़ी ⟨1988⟩
5. बसंती ⟨1980 ⟩
6. हिन्दी उपन्यास संपादित

1.4.3. **कहानी संग्रह**

1. भाग्यरेखा ⟨1953⟩
2. पहला पाठ ⟨1956⟩
3. पट्रियाँ ⟨1973⟩
4. वाःड्च् ⟨1978⟩
5. शोभयात्रा ⟨1981⟩
6. निशाचर ⟨1983⟩

1.4.4. **नाटक**

1. कबीरा खड़ा बाजार में ⟨1981⟩
2. हानूश ⟨1977⟩

3· माधवी §1984§

1·4·5 जीवनी : बलराज भाई ब्रदर्स §1981§

1·4·6 निबंध : अपनी बात §1981§

1·4·7 बालसाहित्य : गुल्ले का खेल §1980§

1·4·8 पत्रपत्रिका : नयी कहानियों का संपादन §1967§

अनुवाद : लगभग बीस रूसी का हिन्दी में अनुवाद। इसी में टॉलस्टाय का पुर्नउत्थान तथा लम्बी कहानियाँ।

कहानीकार भीष्म साहनी

एक श्रेष्ठ कहानीकार के रूप में भीष्म साहनी का नाम बड़ी इज्जत के साथ लिया जाता है। उनकी कथाओं का केंद्रबिंदू रावलपिण्डी का वातावरण रहा है। इसमें उन्होंने हिन्दू, मुसलमान, सिख जैसे मिली जुली संस्कृति का चित्रांकन किया है। उनका पहला कहानीसंग्रह, "भाग्यरेखा" 1961 में प्रकाशित हुआ। यह एक यथार्थवादी कहानी संग्रह है। नया मकान, लीला नंदलाल की, चीफ की दावत, भटकती राख, और अमृतसर आ गया है, यह उनकी लोकोप्रिय कहानियाँ हैं।

"वाड़:च्" भीष्म साहनी का यह एक चर्चिक कहानी संग्रह है। इसमें एक वाड़:च् नामक बौध्द भीक्षु की कथा कही गयी है। इस में भीष्म साहनी ने निम्नवर्ग का बड़ी बारीकी से सहानुभूतिपूर्ण चित्रण किया हैं।

"सागमीट" इस कहानी में भीष्म साहनी ने समकालीन सामाजिक संदर्भ को प्रस्तुत किया है। इस में सुमित्रा नाम की एक नारी पात्र है। "उनकी नजर में छोटे लोग उन कुत्तों की तरह हैं जिनके मुँह में हड्डी दिए रहो भूकंते नहीं हैं।" [14]

"चीफ की दावत" भीष्म साहनी की यह पहली चर्चित और वजनदार कहानी है। यह एक व्यंग्यपूर्ण कहानी है। इसमें कहानीकार ने मध्यवर्गीय जीवन के विरोधों को बड़ी सूक्ष्मता से उद्घाटित किया है।

"अमृतसर आ गया है" भीष्म साहनी की यह कहानी साम्प्रदायिकता का संदर्भ लेकर सामने आती है। इसमें मानव जाति पर व्यंग्य के माध्यम से बड़े मार्मिक प्रहार किये गए हैं। वास्तव में मनुष्य ही मनुष्य का गला घोटत है। भीष्म साहनी ने इस कहानी में रेल में सफर करनेवाले मुसाफिरों की बातचीत की हैं। "भट्कती राख" भीष्म साहनी के प्रस्तुत कहानी में बीते हुए कल और आज का परिचय दिया है। ये भी अपने आप में एक महत्त्वपूर्ण कहानी है।

"खूँटे" कहानी समाज के निम्नवर्ग की संघर्षशीलता और जिजीविषा की कहानियाँ हैं।

"गुलमुच्छे" एक पुराने कॉमरेड की कहानी है, जो दुनिया के बदलाव को समझकर व्यवसायी बन गया है।

"धरोहर" कहानी की माँ बुढ़ापे में आम का पेड़ फल की अपेक्षा किए बिना लगाती है। यही पेड़ आधुनिक जमाने के बहु बेटे को तत्कालिक का विषय बन जाता है। जिस अपेक्षा से माँ ने आम का पेड़ लगाया था, वह अपेक्षाएँ उनके बहु बेटे अपने स्वार्थ के कारण पूरी नहीं कर सकते।

"निशाचर" भीष्म साहनी का मानवीय संवेदना और मानवीय रिश्तों का अभिव्यक्त करनेवाला कहानी संग्रह है। इस कहानीसंग्रह का केंद्रबिंदु व्यक्ति नहीं बल्कि "मनुष्य" है।

भीष्म साहनी के कहानी में सामान्य मनुष्य की संघर्षशीलता और जिजीविषा स्पष्ट है। उनकी कहानियों में प्रगतिशील मानवतावादी दृष्टिकोण रहा है। भीष्मजी की कहानियों में सीधा-सादापन और सहजता है। उनकी कहानियों की भाषा बिना किसी शोर-शराबेवाली नदी की तरह बहती है, उसमें हल्का-सा शोर है। उस में बीच-बीच में उर्दू और पंजाबी के प्रयोग-शब्द और मुहाँवरें मिलते हैं, जिससे भाषा अधिक सरस हो गयी है।

भीष्म साहनी का उपन्यास संसार

प्रस्तावना

भीष्म साहनी के उपन्यास में द्वंद्वात्मक संघर्ष का प्रभावी चित्रण किया है। प्रेमचंद के समान ही भीष्म साहनी के उपन्यास और कहानी का कथ्य आम आदमी की जीवन्त कथा है।

अपने सामान्य लोगों के जीवन उनकी भीषण त्रासदी और कुरूप्रताओं का स्वाभाविक चित्रण किया है। भारत विभाजन का असह्य दुःख न भोगा है। बल्कि उसे आत्मसात भी किया है। उनकी मार्क्सवादी दृष्टि भी उपन्यासों में जगह-जगह पर व्यक्त हुई है। आज भी सामाजिक बदलाव के लिए उनकी लेखनी सक्रिय है। भीष्म साहनी के पाँच उपन्यास हैं ।

झरोखे - (1967)

"झरोखे" भीष्मजी का पहला उपन्यास है। इस उपन्यास में मध्यवर्ग के वातावरण का यथार्थ चित्रण बनाया है। इसे उनके बचपन की आत्मकथा को भी स्वीकार किया जा सकता है।

झरोखे उपन्यास में लेखक ने पीढ़ी संघर्ष की ओर भी संकेत किया है। उपन्यास में बालक भीष्म और बलदेव के आर्य समाजी और धनी व्यापारी पिताजी आदर्शवादी और पूरातन संस्कार बच्चों पर करना चाहते हैं। लेकिन बच्चे नयी जिन्दगी जीने के लिए छटपटाते हैं। इस उपन्यास में विस्मृति की अंधेरे में पड़े अतीत की चित्रों को अपनी कल्पना से प्रस्तुत किया हैं।

कडियाँ - (1970)

"कडियाँ" भीष्म साहनी का दूसरा उपन्यास है। इसमें महेंद्र और प्रमिला के वैवाहिक जीवन और पति-पत्नी का रिश्ता टूटने की कथा है। महेंद्र पर आधुनिकता का प्रभाव है तो प्रमिला पर पुराने संस्कारों का प्रभाव है। प्रमिला के सामने पिता का आदर्श है। वह महेंद्र की तुलना अपने पिता के साथ करती है। महेंद्र चाहता

है, प्रमिला आधुनिक समाज में हँस-खेलकर बाते करें लेकिन प्रमिला के लिए घर ही संसार है। महेंन्द्र प्रमिला को घर से निकला देता है। महेंद्र अपने ऑफिस की कैशियर सुषमा के प्रेम में पड़ जाता है। लेनिक आखिर महेंद्र न सुषमा का प्रेम प्राप्त करता है और न ही पत्नी प्रमिला को अपना सकता है।

इस उपन्यास में भीष्म साहनी ने मध्यवर्गीय परिवार की टूटन की ओर इंगित कर आज की स्थिति को साकार किया है।

तमस - §1973§

"तमस" भारत विभाजन के परिणामस्वरूप देश में हुए भीषण साम्प्रदायिक दंगों की निर्मम करूण गाथा को प्रस्तुत करनेवाला अत्यंत महत्त्वपूर्ण, चर्चित और साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत उपन्यास है। "तमस" का परिवेश पंजाब का क्षेत्र है, जहाँ शहर और गाँवों में भी हिंदू-मुसलमान और सिक्खों में साम्प्रदायिक दंगे हुए थे। इसमें भीष्म साहनी ने हिन्दु सभा, मुस्लीम लीग और सिक्ख समाज जैसी साम्प्रदायिक ताकतों को बेनकाब किया है। ब्रिटीश सरकार के चरित्र को उसके "फूट डालों और राज्य करों" की नीति को कमिश्नर रिचर्ड के माध्यम से पूरी सजगता के साथ उभारा गया है।

मस्जिद मे सूअर की लाश और हिंदुओं के माई सत्तोवाली धर्मशाला के सामने गाय की हत्या देखकर हिंदू-मुसलमान भड़क उठते हैं। वे एक-दूसरे की हत्याएँ कर देते हैं। शहर की यह साम्प्रदायिक आग गाँवों में भी फैला जाती है। नारियों पर बलात्कार किया जाता है। अनेक औरते कूदकर अपनी जान देती हैं।

लेखक ने इस बात की ओर भी संकेत किया है कि साम्प्रदायिक आग का शिकार हमेशा इत्रफरोश, करीम खान, मिल्खी जैसे गरीब लोग ही होते हैं, और लाला लक्ष्मीनारायण, वनप्रस्थजी तथा सरदार तेजसिंह जैसे लोगों का बाल भी बाँका नहीं होता है। "तमस" की संरचना अनेक कहानियों के संकलन से की गई है। उपन्यास का कथानक थोड़ासा असंगठित होते हुए भी कथानक का क्रम

बनाने में लेखक सफल हो चुका है। कथ्य और शिल्प दोनों ही दृष्टि से तमस महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। इसमें मानव की अमानवीय व्यवहार का दर्दभरा चित्रण किया है।

बसंती

बसन्ती उपन्यास का कथ्य उन निम्न वर्ग के लोगों का जीवन है जो महानगर दिल्ली में रोजगार की तलाश में निरन्तर उजड़ता-बसता है। इसमें भीष्म साहनी ने पूँजीवादी और सामन्ती व्यवस्था की दोहरी शिकार निम्नवर्ग की अपेक्षित और शोषित नारी बसन्ती के विद्रोह का चित्रण किया है, जो प्रचलित व्यवस्था के ढाँचे को तोड़ने का संघर्ष करती है। स्वतंत्र मार्ग खोजने का प्रयत्न करती है। उपन्यास की नायिका बसन्ती उपेक्षाओं, अभावों, त्रासदियों और संघर्ष का जीवन भोगकर जीती हैं।

उपन्यास में निम्न वर्ग के लोगों की बस्तियों का बार-बार टूटना, बसना इस बात का स्पष्ट संकेत है कि आज़ादी साधारण लोगों को नहीं मिली, बल्कि आज़ादी का सर्वाधिक लाभ पूँजीपतियों, नेताओं, ठेकेदारों और अधिकारियों को ही मिला है।

दिल्ली में पक्की इमारते बनने के बाद हर-बार मजदूरों की झोपडियाँ उठ जाती हैं। रमेश नगर बना तब मजदूरों ने गैरकानूनी तरीके से सड़क के किनारे वीरान टीले पर अपनी झोपडियाँ कायम की लेनिक यह झोपडियाँ अधिकारी के आदेश और पुलिस की मद्द से तोड़ दी जाती हैं।

मय्यादास की माड़ी - {1988}

भीष्म साहनी का नवीनतम चर्चित उपन्यास है - "मय्यादास की माड़ी" इसमें एक दीवान परिवार की कहानी है, जब हिंदुस्थान में अंग्रेजी शासन अपने पाँव जमा रहा था और देशी रियासते टूट रही थी।

इसमें सभी पात्र उपन्यासकार की कल्पना की उपज हैं। इस काल के सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करने के लिए लेखक ने जातिविशेष के एक परिवार को दीवान धनपतराय की विगत

और आगात चार पीढ़ियों की कहानी इस उपन्यास में कही गयी है। इसकी कथा को बुनने के लिए वंश-परंपरा तक ही कथा को सीमित रखा गया है।

दीवान मय्यादास द्वारा दीवान धनपतराय को माड़ी से निकालना, दीवान धनपतराय का इधर-उधर भटकना उसका ऊँटों का व्यापार, अंग्रेज साम्राज्य को ऊँटों के पूँछों की रसीद पहुँचाना, खालसा राज्य के साथ ही दीवान मय्यादास का पतन, दीवान मय्यादास की माड़ी की नीलामी, अंग्रेज साम्राज्य से दीवान धनपतराय को तीन गाँव का लगान वसूलने का अधिकार, किसानों का शोषण, विधवा भागसुद्री की जीवन कहानी, लेखराज की कैद, रूक्मिणी की आत्महत्या, दीवान धनपतराय की मृत्यू, हुकुमतराय का अंग्रेजों के साथ साँठ-गाँठ आदि घटनाओं का वर्णन किया है।

इस प्रकार इसक उपन्यास की कथा परिवार की कथा न लगकर तत्कालिन भारत की कथा लगती है।

1.5. निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि भीष्म साहनी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे उत्कृष्ट साहित्यकार भी हैं। वे नाटक, कहानी, उपन्यास, जीवनी आदि साहित्यकार के रूप में हिन्दी जगत् में चर्चित हुए। इस बात का प्रमाण उनकी साहित्य रचनाएँ हैं। उन्होंने बीसवी सदी के जगत् की सच्चाई को अपने विचारों द्वारा प्रस्तुत किया है।

साहित्यकार की एक अपनी अलग ही प्रतिभा होती है, वह प्रतिभा उन्हें जन्मजात ही मिली है। भीष्म साहनी पढ़ाई में अच्छे थे। उन्होंने आज़ादी के पहले अंग्रेजी भाषा में एम्.ए. की पढ़ाई करना उनकी उत्कृष्ट प्रतिभा का ही प्रमाण है। उन्होंने अंग्रेजी पढ़ाई की है और हिन्दी में लिखा है। उन्होंने साहित्यिक सौंदर्य को अपने साहित्य में स्पष्ट किया है।

भीष्म साहनी एक ऐसे परिवार में जन्मे जिसके कई सदस्यों ने पहले लेखन को अपनाया था। बलराज साहनी और उनके चचेरे भाई ने लेखन को अपनाया था। उनकी फूफेरी बहने, सत्यवती मल्लिका जानीमानी कहानीकार थी। पुरुषार्थवती बड़ी सुंदर मर्मस्पर्शी कविताएँ लिखती थी। बलराज साहनी के व्यक्तित्व और साहित्यिक रूचि का भीष्मजी पर गहरा असर हुआ है, इसी कारण वे बलराज साहनी पर जीवनी लिख पाए।

भीष्म साहनी की हिन्दी कथा प्रगतिशील परम्परा के शक्तिशाली हस्ताक्षर हैं। इन पर प्रेमचन्द और यशपाल की गहरी छाप है। जब कोई भी कलाकार या साहित्यकार एक संवेदनशील प्राणी होता है। वह दूसरे लोगों के सुखदुःख को अपना सुखदुःख मानते हैं। वह जीवन और समाज का निरीक्षण कर अपनी कलाकृति के लिए बहुत कुछ लेता है। उसी तरह भीष्म साहनी भी अपने कथा संसार की सृष्टि करने के लिए जीवन का निरीक्षण करते हैं। जिन्दगी का निरीक्षण कर अपनी प्रज्ञा के माध्यम से वह जीवन और पात्रों को कथा के तानेबाने में बुनते हैं।

उनका कडियाँ उपन्यास मध्यमवर्गीय पति-पत्नी महेन्द्र और प्रमिला के वैवाहिक अनबन पर आधारित है। इस उपन्यास में उन्होंने मध्यवर्गीय परिवार की टूटन की ओर इंगित कर आधुनिकता के प्रभाव को स्वीकारा है। यह उपन्यास जीवन के निरीक्षण पर ही आधारित है।

उनका दूसरा "झरोखे" उपन्यास में बच्चों का स्वाभाविक विकास होने देना चाहिए, नहीं तो बच्चे लादे गए बंधनों के खिलाफ संघर्ष करते हैं। उनका यह उपन्यास बच्चों के प्रवृत्ति दमन के खिलाफ संघर्ष की ही कथा है।

"बसन्ती" उपन्यास में निम्न मध्यवर्ग और मध्यवर्ग की विडंम्बनाएँ, अन्तर्विरोध, आर्थिक और सामाजिक समस्याएँ बदलते सामाजिक मूल्य आदि का चित्रण आज के शहरी जीवन का निरीक्षण किया है।

"तमस" में हिन्दु-मुसलमान और सिक्खों की कहानी है जो एक ही नस्ल के लोग हैं, जो अपने इतिहास को जानते नहीं है केवल जीते हैं। भीष्मजी ने

"तमस" में साम्प्रदायिक अंधकार में भी उन्होंने साम्प्रदायिक ताकतों को बेनकाब किया है।

इस प्रकार विभिन्न व्यक्ति, लेखक, परिवार, परिस्थिति, मार्क्सवाद अपने जीवन का अतीत, जीवनानुभव से प्रेरणा लेकर भीष्म साहनी ने अपने साहित्य की सृष्टि की है। भीष्म साहनी में प्रतिभा के साथ-साथ जीवन का अवलोकन, अनुभूतियाँ और अन्य साहित्यिकों की रचना की है।

—

संदर्भ सूची

1· भीष्म साहनी "अपनी बात" पृ· 17

2· प्रताप ठाकूर / राजेश्वर सक्सेना "भीष्म साहनी व्यक्ति और रचना" पृ· 17

3· भीष्म साहनी "अपनी बात" पृ· 10

4· प्रताप ठाकूर / राजेश्वर सक्सेना, "भीष्म साहनी : व्यक्ति और रचना", पृ· 12

5· प्रताप ठाकूर / राजेश्वर सक्सेना, "भीष्म साहनी : व्यक्ति और रचना", पृ· 66

6· भीष्म साहनी , "अपनी बात", पृ· 95

7· भीष्म साहनी, "अपनी बात", पृ· 97

8· भीष्म साहनी, "अपनी बात", पृ· 98

9· भीष्म साहनी, "अपनी बात", पृ· 101

10· भीष्म साहनी, "अपनी बात", पृ· 82

11· प्रताप ठाकूर / राजेश्वर सक्सेना , "भीष्म साहनी : व्यक्ति और रचना", पृ· 65

12· शीला साहनी, "सारिका", अगस्त 1990 , पृ· 18

13· भीष्म साहनी, "अपनी बात", पृ· 26-27

14· भीष्म साहनी, "अपनी बात", पृ· 81